



JNU Just In

An initiative of School of Media Studies

JNU Just In | Jaipur | March 2024 | Vol.: 7 | Issue: 03 | Pages: 8 | Price: 1 | Monthly Bilingual (Hindi/English)

प्रोफेसर वी एस मणि मेमोरियल इंटरनेशनल लॉ मूट कोर्ट प्रतियोगिता मूट कोर्ट, कानूनी शिक्षा के अपरिहार्य अंग: जस्टिस अनिल कुमार सिन्हा



जयपुर, 16 मार्च, 2024: प्रोफेसर वीएस मणि मेमोरियल इंटरनेशनल लॉ मूट कोर्ट प्रतियोगिता के 10वें संस्करण का तीन दिवसीय कार्यक्रम जयपुर नेशनल यूनिवर्सिटी के सीडलिंग स्कूल ऑफ लॉ एंड गवर्नंस में आयोजित किया गया था। प्रतियोगिता के अंतिम दिन के अतिथि, नेपाल के सर्वोच्च न्यायालय के पूर्व न्यायाधीश, माननीय न्यायमूर्ति अनिल कुमार सिन्हा; प्रोफेसर एस शिवकुमार, भारतीय विधि संस्थान, नई दिल्ली के वरिष्ठ प्रोफेसर, भारत के विधि आयोग के सदस्य और राष्ट्रमंडल कानूनी शिक्षा संघ के अध्यक्ष और माननीय न्यायमूर्ति एनके जैन, पूर्व अध्यक्ष, राजस्थान राज्य मानवाधिकार आयोग और पूर्व मुख्य न्यायाधीश कर्नाटक और मद्रास उच्च न्यायालय के अधिकारी उपस्थित थे।

न्यायमूर्ति अनिल कुमार सिन्हा ने सीडलिंग स्कूल ऑफ लॉ एंड गवर्नंस के शिक्षकों और छात्रों को एक प्रतियोगिता आयोजित करने के लिए बधाई देकर शुरुआत की, जिसमें पूरे देश के लॉ कॉलेजों की भागीदारी को आकर्षित किया गया

है। उन्होंने उल्लेख किया कि मूटिंग एक बहुत ही महत्वपूर्ण भूमिका निभाती है और वकालत कौशल सीखने का पहला मंच है। उन्होंने कहा कि हाल के वर्षों में, मूट कोर्ट कानूनी शिक्षा का एक अनिवार्य हिस्सा बनकर उभरा है। उन्होंने कहा कि ऐसी गतिविधियों में भाग लेने का लक्ष्य जीत या हार से अधिक महत्वपूर्ण है। "स्वस्थ प्रतिस्पर्धा की भावना कानून के छात्रों को अपने कौशल में सुधार करने के लिए प्रेरित करती है, लेकिन उन्हें यह याद रखना चाहिए कि जब वे अंततः कानूनी अभ्यास करते हैं तो कुछ अन्य पहलू भी होते हैं।" भारतीय विधि संस्थान, नई दिल्ली के वरिष्ठ प्रोफेसर, भारतीय विधि आयोग के सदस्य और राष्ट्रमंडल कानूनी शिक्षा संघ के अध्यक्ष प्रोफेसर एस शिवकुमार ने मूट कोर्ट प्रतियोगिता का नाम शिक्षक (प्रोफेसर (डॉ) वीएस मणि) के नाम पर रखने के लिए विश्वविद्यालय को बधाई दी। एसएसएलजी के संस्थापक निदेशक। उन्होंने मूट कोर्ट अभ्यास के महत्व और आज के समकालीन कानूनी क्षेत्र में इसकी प्रासंगिकता पर

ध्यान केंद्रित किया। उन्होंने उस समय के बारे में बात की जब कोई मूट कोर्ट नहीं था तब वे कानून के बारे में केवल सिद्धांत के माध्यम से सीखा जाता था लेकिन आजकल मूट कोर्ट और अन्य कई गतिविधियां हैं जिनके द्वारा कानून को सटीक तरीके से जानना आसान हो गया है। उन्होंने कहा कि कभी भी सीखना बंद नहीं किया जाना चाहिए। उन्होंने सांस्कृतिक मूल्यों को ध्यान रखकर कानूनी प्रयासों को बढ़ावा देने की बात कही।

डॉ. संदीप बख्शी ने इस प्रतिष्ठित आयोजन के लिए लॉ स्कूल के संकाय सदस्यों और छात्रों के प्रयासों की सराहना की। उन्होंने सीडलिंग स्कूल ऑफ लॉ एंड गवर्नंस में प्रोफेसर (डॉ) वीएस मणि द्वारा मूटिंग की शुरुआत के बारे में बताया। डॉ. बख्शी ने कहा, "भारतीय कानूनी कौशल अद्वितीय है और ऐसे मूट कोर्ट का उद्देश्य उन्हें और अधिक विकसित करना है।" उन्होंने मूट कोर्ट प्रतियोगिता में भाग लेने वाले सभी प्रतिभागियों से दुनिया के प्रतिष्ठित कानूनी पेशेवर बनने का आग्रह किया।

शेष पृष्ठ 3 पर...

एसएचएमसीटी ने आयोजित किया आतिथ्य

होटल प्रबंधन, आतिथ्य के अनुभवों में उत्कृष्टता के प्रति हमारी प्रतिबद्धता का प्रतिबिंब है—डॉ. संदीप बख्शी



स्कूल ऑफ होटल मैनेजमेंट एंड कैंटरिंग टेक्नोलॉजी, जयपुर नेशनल यूनिवर्सिटी के द्वारा छात्रों के लिए इंटरकॉलेज प्रतियोगिता 'आतिथ्य-2024' का समापन हुआ इसका मुख्य उद्देश्य होटल उद्योग चल रहे नए ट्रेड्स और मापदंडों से अवगत कराना था साथ ही पेशेवर शेफ से नई खान-पान सम्बन्धित जानकारियां लेना था।

दो दिवसीय कार्यक्रम में आये विशिष्ट अतिथियों ने मुख्यतः जयपुर के होटल ओबेरॉय राजविलास से शेफ राजीव, हिल्टन से सुश्री निवेदिता और श्री रितेश, होटल रेडिसन, जयपुर सिटी सेंटर से सुश्री रितु शर्मा, श्री उपेन्द्र सिंह, श्री गौरव कुमार, "राज रिसॉर्ट्स", के प्रबंध निदेशक श्री आकाश शर्मा तथा होटल उद्योग के दिग्गज शामिल हुए। अनन्ता होटल के मास्टर शेफ इमरान खान, कॉर्पोरेट शेफ शैलेश विभिन्न आयोजनों को जज करने और छात्रों को उनकी विशेषज्ञता के क्षेत्र में मूल्यवान सुझाव प्रदान करने के लिए इस कार्यक्रम में शामिल हुये।

जयपुर नेशनल यूनिवर्सिटी के चांसलर डॉ. संदीप बख्शी ने प्रतिभागियों को प्रेरित करते हुए कहा कि वर्तमान में होटल इंडस्ट्री में प्रगति के नये आयाम खुल रहे हैं तथा होटल प्रबंधन की दुनिया में एक समृद्ध यात्रा की शुरुआत हो रही है। यह सिर्फ

एक सेवा उद्योग से कहीं अधिक एक कला, एक विज्ञान है, और अतिथि अनुभवों में उत्कृष्टता के प्रति हमारी प्रतिबद्धता का प्रतिबिंब है। यह कार्यशाला हमारे लिए होटल प्रबंधन की जटिलताओं को समझने, उद्योग के रुझानों का पता लगाने और इस निरंतर विकसित हो रहे क्षेत्र में उत्कृष्टता प्राप्त करने के लिए आवश्यक कौशल विकसित करने का एक अनूठा अवसर प्रस्तुत करती है। निरंतर सीखने और उत्कृष्टता की खोज के प्रति हमारी चेतना को नयी दृष्टि देती है जो निस्संदेह आज के प्रतिस्पर्धी परिस्थ में अग्रणी रहने में मदद करेगी। इस कार्यशाला के दौरान, उद्योग विशेषज्ञों के साथ जुड़ने, अनुभवी पेशेवरों से सीखने और आतिथ्य क्षेत्र को आकार देने वाले नवीनतम रुझानों और नवाचारों में अंतर्दृष्टि प्राप्त करने का अवसर मिलेगा। कार्यशाला इसमें शामिल सभी लोगों के लिए एक परिवर्तनकारी अनुभव होगा, जो दुनिया में आगे बढ़ने के लिए आवश्यक कौशल, ज्ञान और नेटवर्क से लैस करेगी।

स्कूल ऑफ होटल मैनेजमेंट एंड कैंटरिंग टेक्नोलॉजी के निदेशक डॉ. अजीत के.आर. सिंह ने कहा कि "आतिथ्य" के तीसरे संस्करण में देश के कोने-कोने से 15 से अधिक टीमों भाग ले रही हैं, जिनमें अलीगढ़, हल्दीवानी, हैदराबाद, दिल्ली और एनसीआर, देहरादून, रूड़की से आई टीमों

को एक मंच प्रदान किया गया। आप्रपाली इंस्टीट्यूट ऑफ होटल मैनेजमेंट हल्दीवानी, कलिनरी एकेडमी ऑफ इंडिया हैदराबाद, स्कूल ऑफ होटल मैनेजमेंट एंड टूरिज्म देवभूमि उत्तराखंड, फूड क्राफ्ट इंस्टीट्यूट एएमयू अलीगढ़, क्वांटम स्कूल ऑफ हॉस्पिटैलिटी एवं पर्यटन रूड़की आदि एक मंच पर अपने कौशल का प्रदर्शन किया। प्रतिभागियों ने खाद्य उत्पादन, आवास प्रबंधन, बारटेंडिंग के क्षेत्रों में "जिगर बनाम पोनी", "लज्जत-ए-खास", "डेकोर डी पैटिसरी" और "क्विज़ेरिया" जैसी विभिन्न प्रतियोगिताओं का आयोजन किया गया।

इस अवसर पर जेएनयू के एग्जीक्यूटिव डायरेक्टर डॉ. प्रीति बक्शी, प्रो. चांसलर प्रो. एच. एन. वर्मा, वाइस चांसलर प्रो. आर. एल. रैना के साथ होटल मैनेजमेंट के निदेशक, शिक्षकगण एवं विद्यार्थी भी उपस्थित थे। कार्यक्रम के अंत में सभी विभागों के विद्यार्थियों ने अपने शिक्षकों के साथ समूह चित्र लिए। स्कूल ऑफ होटल मैनेजमेंट एंड कैंटरिंग टेक्नोलॉजी के छात्रों को ज्ञान प्रदान करने के लिए सक्रिय रहा है, और समग्र शिक्षा प्रदान करने वाले जोनल स्तर पर इस तरह के आयोजन सफलतापूर्वक कर रहा है।

पूर्वित सिंह सोलंकी, बीएससी-एचएचए द्वितीय

Hippocratic Oath Ceremony @ JNU

**A doctor should be recognized as an angel who saves lives:
Dr. Sandeep Bakshi**



The Institute of Medical Sciences and Research Center of Jaipur National University organized the Hippocratic Oath ceremony at JNU Medical College. During this program, the intern Medical Practitioners of 2018 batch took oath to uphold the ethical values. On this occasion, JNU Chancellor Dr. Sandeep Bakshi, in his address as the chief guest, said that in the medical field professional ethics should be followed with commitment because we have to not only treat the patient but also health with psychological therapy. He said that the identity of the doctor should be revered as a life saving angel. In the Hippocratic Oath ceremony, all the interns took oath and the organizers of the ceremony, Dr. Perna and Dr. Raman, welcomed the guests and conducted the program.

At the Hippocratic Oath ceremony at JNU on Tuesday, the interns, who were learning healing techniques under

the guidance of medical experts from JNU, promised to play a fair role in their profession. On this occasion, JNU Chancellor Dr. Sandeep Bakshi said that JNU Medical College and JNU Hospital have religiously followed the treatment and best service of patients. He hoped that the young doctors of the future, who are getting training from the latest technology available in JNU as interns, will contribute with a dedicated spirit in the medical service sector. Dr. Bakshi said that today we have the latest technology in the medical field for disease diagnosis, but for therapy and care, there is a great need for the doctors to maintain an understanding and sharing of relationship with the patient. He said that along with medicines, the kind thinking and affectionate behavior of the doctors also enable the patients to recover quickly. Specialist doctors and key officials of JNU Hospital were present in this swearing-in ceremony.

Zara Amjad, BAJMC 2nd

प्रोफेसर की एक मणि त्रेमोरियल... ...पृष्ठ 1 से आगे

देश के विभिन्न हिस्सों से राष्ट्रीय कानून विश्वविद्यालयों, राज्य विश्वविद्यालयों और कानून स्कूलों की 26 से अधिक टीमों ने भाग लिया और अपने तर्क प्रस्तुत किए। 8 टीमों में से 4 टीमों – ट्रिनिटी इंस्टीट्यूट ऑफ प्रोफेशनल स्टडीज, नई दिल्ली, मारवाड़ी यूनिवर्सिटी, केएलई यूनिवर्सिटी,

बेंगलुरु और श्रद्धैम्डज ने सेमीफाइनल में जगह बनाने के लिए आगे प्रतिस्पर्धा की। सेमीफाइनल में पहुंचने वाली 4 टीमों ने फाइनल में जगह बनाने के लिए एक-दूसरे से कड़ी टक्कर ली। सेमीफाइनल राउंड की कड़ी प्रतिस्पर्धा से जूझते हुए, मारवाड़ी यूनिवर्सिटी, अहमदाबाद और

केएलई यूनिवर्सिटी, बेंगलुरु की टीमों मजबूत प्रतिस्पर्धी थीं। विजेता टीम को ट्रॉफी और 30,000 रुपये का नकद पुरस्कार और उपविजेता को ट्रॉफी और 20,000 रुपये का नकद पुरस्कार देकर सम्मानित किया गया।

भूमिका व्यास, बीएजेएमसी द्वितीय

Scarcity of Water: A Global Challenge

Water covers 70% of our planet, and it is easy to think that it will always be plentiful. However, freshwater the stuff we drink, bathe in, irrigate our farm fields with is incredibly rare. Only 3% of the world's water is fresh water, and two-thirds of that is tucked away in frozen glaciers or otherwise unavailable for our use.

As a result, some 1.1 billion people worldwide lack access to water, and a total of 2.7 billion find water scarce for at least one month of the year. Inadequate sanitation is also a problem for 2.4 billion people they are exposed to diseases, such as cholera and typhoid fever, and other water-borne illnesses. Two million people, mostly children, die each year from diarrheal diseases alone.

Many of the water systems that keep ecosystems thriving and feed a growing human population have become stressed. Rivers, lakes and aquifers are drying up or becoming too polluted to use. More than half the world's wetlands have disappeared. Agriculture consumes more water than any other source and wastes much of that through inefficiencies. Climate change is altering patterns of weather and water around the world, causing



shortages and droughts in some areas and floods in others.

At the current consumption rate, this situation will only get worse. By 2025, two-thirds of the world's population may face water shortages. And ecosystems around the world will suffer even more.

Water scarcity is a typical occurrence, even in nations with sufficient water resources. It is obvious that climate change, together with human factors, is increasingly depriving children of their right to safe water and sanitation, even if there are many possible causes for this, including conflict, failed infrastructure and distribution systems, contamination, and poor management of water resources.

Access to clean water for drinking and practicing basic hygiene at home, in schools, and in healthcare facilities is restricted by water scarcity. Sewer systems may malfunction and the risk of getting diseases such as cholera increases

when there is a shortage of water. Expensive water also gets scarcer. Women and children suffer more from water scarcity because they are frequently the ones who must gather it.

What is Water Stress?

When a region's need for clean, useable water exceeds its availability, it is referred to as experiencing water stress or scarcity. Regarding demand, home usage (11 percent) and industrial uses (19 percent) account for the remaining freshwater, with the majority (approximately 70 percent) going toward agriculture. On the supply side, aquifers provide access to groundwater and surface freshwater like rivers, lakes, and reservoirs. However, several approaches are used by scientists to define and quantify water stress, which takes into consideration a range of criteria such as accessibility, water quality, and seasonal variations. However, assessments of water stress are not always accurate, especially when groundwater is involved. According to water specialist and professor at Columbia University Upmanu Lall, "any numbers out there have to be taken with a grain of salt." "Groundwater stock and usage are typically not taken into account by any of these definitions."

What causes water scarcity?

Water scarcity is commonly classified into two types: economic scarcity, which occurs when there is insufficient water infrastructure, and physical scarcity, which occurs when there is a shortage of water due to regional biological circumstances.

Water stress is usually the result of the two working together. For example, a stressed area may experience reduced rainfall in addition to inadequate water storage and sanitary services. According to experts, human factors are frequently at the root of a region's water stress issues, even in cases where there are strong environmental causes. This is especially true when it comes to access to proper sanitation and clean water. For instance, the most recent conflict in Ukraine destroyed vital infrastructure, resulting in restricted or non-existent access to safe water for six million people in 2022.

However, certain regions like Oman and the southwestern United States that experience physical water scarcity also have the infrastructure necessary for life to flourish there. Numerous authorities regulate or have other influence on the water supply, ranging from the federal government to local governments. More than six federal agencies in the US are involved in various areas of water management. For example, the Federal Emergency

Management Agency (FEMA) plans for and handles water disaster relief, while the Environmental Protection Agency (EPA) enforces clean water standards. State and municipal governments have comparable powers to manage and safeguard water resources, including through zoning and restoration initiatives. UN researchers predict a 20% decline in renewable water resources for every 1°C (1.8°F) increase in the world average temperature. It is anticipated that both the number of water-stressed places and the severity of water



stress in already impacted regions will rise due to global warming. Australia, the southern United States, and the countries of North Africa are examples of subtropical regions that are predicted to warm and have longer and more frequent droughts; on the other hand, some places are also predicted to see more intense rainfall when it does occur. According to climate scientists, the weather in tropical areas will also grow increasingly unpredictable. One potential problem area is agriculture. The erratic nature of rainfall

and the accelerated evaporation of soil due to rising temperatures are detrimental to farming. Floods are also predicted to increase due to a more unpredictable climate.

Effects:

Using aquifers is typical in areas with little rainfall or little access to surface water. If the rate of aquifer removal from groundwater resources surpasses the rate of natural recharge, it may pose a hazard to future water supplies. A third of the major aquifer systems in the world are thought to be in trouble. Furthermore, major environmental degradation and ecosystem collapse can come from the rerouting, misuse, and contamination of rivers and lakes for municipal, industrial, and agricultural purposes. The Aral Sea, which was formerly the fourth-largest

body of inland water in the world but has reduced to a fraction of its previous extent due to the diversion of its inflowing rivers for agricultural irrigation, is a prime example of this. As water resources become scarce, there are increasing problems with fair water allocation. Governments may be forced to choose between agricultural, industrial, municipal, or environmental interests, and some

Remaining on pg 7...

प्रदूषण: कारण, चुनौतियाँ और समाधान

प्रदूषण एक ऐसी समस्या है जो हमारे पर्यावरण, स्वास्थ्य, और समाज को प्रभावित करती है। आधुनिक जीवनशैली, औद्योगिकीकरण, और जलवायु परिवर्तन की वजह से प्रदूषण की समस्या बढ़ती जा रही है। इस लेख में प्रदूषण के कारणों, चुनौतियों, और संभावित समाधानों पर चर्चा की जाएगी।



जल प्रदूषण से प्रभावित जलमार्ग और स्रोतों के जलजीवन, और पानी के सेवन के लिए उपयुक्तता में कमी आती है, जिससे लोगों को पानी संबंधी समस्याओं का सामना करना पड़ता है।

जल प्रदूषण को रोकने के लिए कई प्रयास किए जा रहे हैं। इनमें से कुछ मुख्य प्रयास जल प्रदूषण के स्रोतों को पहचानना, और उन्हें कम करने के लिए विभिन्न प्रदूषण नियंत्रण तकनीकों का

प्रदूषण के प्रकार:

1. वायु प्रदूषण:

वायु प्रदूषण एक महत्वपूर्ण पर्यावरणीय समस्या है जो समुद्र तटों से लेकर पर्वत श्रेणियों तक हर क्षेत्र में पायी जा सकती है। वायु प्रदूषण वायुमंडल में विभिन्न विषाणु, गैसेस, धूल और रासायनिक पदार्थों के विशेष उपस्थिति के कारण होता है जो मानव स्वास्थ्य को हानि पहुंचा सकते हैं।

वायु प्रदूषण का मुख्य कारण और स्रोतों में उद्योग, परिवहन, कृषि, और ऊर्जा उत्पादन शामिल होते हैं। इन सभी क्षेत्रों में इंजनों, उपकरणों, और उत्पादक प्रक्रियाओं से विषाणुओं, धूल, और विषाणुओं का उत्सर्जन होता है जो वायुमंडल में जा सकता है। यह अत्यधिक गाढ़े नगरों और उद्योगीकृत क्षेत्रों में अधिक मात्रा में देखा जाता है।

वायु प्रदूषण के प्रमुख प्रभावों में स्वास्थ्य समस्याएं, जैव विविधता की हानि, और जलवायु परिवर्तन के लिए बढ़ते खतरे शामिल होते हैं। वायुमंडल में विषाणुओं और गैसों के उत्सर्जन के कारण मानव स्वास्थ्य पर कई प्रकार की बीमारियाँ हो सकती हैं, जैसे कि श्वासन विकार, हृदय रोग, या फिर सांस लेने में परेशानी।

वायु प्रदूषण का एक और महत्वपूर्ण प्रभाव है जलवायु परिवर्तन। विशेष रूप से जलवायु परिवर्तन के लिए अधिकतम उत्सर्जन कारक हैं, जो अधिकतम ग्रीनहाउस गैसों की उत्पत्ति के कारण होते हैं।

इस समस्या को सुलझाने के लिए कई प्रयास किए जा रहे हैं। सार्वजनिक परिवहन में उपयोग

होने वाली ऊर्जा के श्रेणियों के प्रयोग में परिवर्तन, और उद्योगों में साफ संचालन तकनीकियों का अवलोकन, स्वच्छ ऊर्जा के स्रोतों का प्रचार, और बिजली उत्पादन के लिए अधिक पर्यावरणीय उत्पादन तकनीकियों की अनुसंधान की जानकारी उपयोगी है।

2. जल प्रदूषण:

जल प्रदूषण एक गंभीर पर्यावरणीय समस्या है जो जल संसाधनों की गुणवत्ता को कम करता है और जीवन के लिए हानिकारक होता है। यह एक समस्या है जो समुद्र तटों से लेकर नदियों, झीलों, और कुएं तक हर प्रकार के जल स्रोतों को प्रभावित करती है। जल प्रदूषण का मुख्य कारण और स्रोतों में उद्योग, परिवहन, कृषि, और शहरी विकास के लिए जल का अत्यधिक उपयोग शामिल होते हैं।

जल प्रदूषण के कई कारक होते हैं, जैसे कि निकटतम संपदा से विकसित स्थानों से अवांछित निकायों का निकास, और औद्योगिक, कृषि, और शहरी विकास के प्रक्रियाओं से जल में अतिरिक्त निकायों का निकास। उदाहरण के लिए, औद्योगिक उत्पादन, जल संचारण, और विकास के लिए अधिक जल का उपयोग जल प्रदूषण को बढ़ाता है। निकायों में विषैले धातु, रासायनिक और जैविक उत्पादन, और उपयोग किए जाने वाले जल में रासायनिक पदार्थ जल प्रदूषण के कारणों में शामिल होते हैं।

जल प्रदूषण के प्रमुख प्रभावों में स्वास्थ्य समस्याएं, जैव विविधता की हानि, और जलवायु परिवर्तन के लिए बढ़ते खतरे शामिल होते हैं।

अवलोकन करना है। स्थानीय स्तर पर, नगरीय कचरे का प्रबंधन, और स्वच्छ जल संचारण प्रणालियों के विकास जल प्रदूषण को कम करने में मददगार हो सकते हैं। इसके अलावा, समुद्र तटों और नदियों की सफाई और पुनर्निर्माण, और सामुद्रिक परिवहन के लिए निर्मित सुरक्षित जल प्रणालियों का विकास भी महत्वपूर्ण है।

3. ध्वनि प्रदूषण:

सांस्कृतिक कार्यक्रम और मनोरंजन कार्यक्रम भी ध्वनि प्रदूषण के प्रमुख स्रोत हो सकते हैं। ध्वनि प्रदूषण के प्रमुख प्रभावों में सुनने की क्षमता में कमी, तनाव, स्वास्थ्य समस्याएं, नींद की समस्याएं, और मनोवैज्ञानिक अस्थिति शामिल होती हैं। ध्वनि प्रदूषण के साथ ही यहां तक कि पक्षियों और जानवरों के लिए भी हानिकारक हो सकता है, जो उनकी संवेदनशीलता पर बुरा प्रभाव डाल सकता है।

ध्वनि प्रदूषण को कम करने के लिए कई प्रोत्साहन कार्यक्रम और नियम बनाए गए हैं। उदाहरण के लिए, ध्वनि प्रदूषण के स्रोतों पर नियंत्रण लगाने, उपयुक्त ध्वनि नियंत्रण उपकरणों का उपयोग करने, और ध्वनि प्रदूषण के नियमों का पालन करने के लिए कानूनों का प्रचार-प्रसार किया जाता है। सरकारें ध्वनि नियमों का पालन करने और ध्वनि स्रोतों के प्रभाव को कम करने के लिए औद्योगिक इकाइयों को प्रोत्साहित करती हैं।

ध्वनि प्रदूषण एक महत्वपूर्ण पर्यावरणीय मुद्दा है जो किसी क्षेत्र में अत्यधिक ध्वनि के कारण होता

जेएनयू हॉस्पिटल में मोतियाबिंद सर्जरी के लिए आयातित मशीन का उद्घाटन

फेको मशीन से बेहतर इलाज संभव – डॉ संदीप बख्शी



जयपुर नेशनल यूनिवर्सिटी के चांसलर डॉ. संदीप बख्शी ने जेएनयू हॉस्पिटल में मोतियाबिंद सर्जरी के लिए स्विट्जरलैंड से आयातित अत्याधुनिक मशीन का उद्घाटन किया। फारोस फेकोइमल्सीफिकेशन सिस्टम, ओर्टली, स्विट्जरलैंड सभी प्रकार के मोतियाबिंद की

सर्जरी के लिए एक कॉम्पैक्ट बहुमुखी मशीन है। मशीन पोर्टेबल, हल्की, विश्वसनीय, उपयोगकर्ता के अनुकूल और तकनीकी रूप से उन्नत प्रणाली है। उद्घाटन पर डॉ. बख्शी ने कहा कि अत्याधुनिक मशीन लगने से न केवल राजस्थान बल्कि अन्य राज्यों के मरीजों को भी फायदा होगा। उन्होंने कहा कि इस मशीन के प्रयोग से मोतियाबिंद का ऑपरेशन आसानी से एवं सफलतापूर्वक किया जा सकेगा। जेएनयू हॉस्पिटल हमेशा मरीजों को सर्वोत्तम उपचार प्रदान करने और उन्हें वित्तीय नुकसान से बचाने

के लिए प्रयासरत है। उन्होंने कहा कि हम अत्याधुनिक ऑपरेशन थिएटर में नई मशीनों से जनता को सफलतापूर्वक सेवा दे सकेंगे। इसमें अद्वितीय तरल अवधारणा है, यह सीधे नाभिक के टुकड़े का पालन करने की क्षमता की अनुमति देता है और मजबूत टुकड़े को पकड़ने की क्षमता प्रदान करता है। रुके हुए टुकड़े यूधएस ऊर्जा को अवशोषित करते हैं और फिर बिना अवरोध के पायसीकरण के बाद कुशलतापूर्वक एस्पिरेटेड होते हैं। पूरी प्रक्रिया के दौरान फेको हैंड पीस टंडा रहता है जिसके परिणामस्वरूप कॉर्निया एंडोथेलियल सेल का कोई नुकसान नहीं होता है या न्यूनतम होता है। यह तकनीक आंखों से संबंधित जटिलताओं को सुधारने और उत्कृष्ट पोस्टऑपरेटिव विजि और सर्जिकल परिणाम में मदद करती है।

हिमांशु पांडे, बीएजेएमसी द्वितीय

Timeline

This Month...

March 15, 44 B.C. - Julius Caesar was assassinated in the Senate chamber in Rome by Brutus and fellow conspirators. After first trying to defend himself against the murderous onslaught, Caesar saw Brutus with a knife and asked "Et tu, Brute?" (You too, Brutus?) Caesar then gave up the struggle and was stabbed to death.

.....

March 12, 1609 - The island of Bermuda was colonized by the British after a ship on its way to Virginia was wrecked on the reefs.

.....

March 4, 1681 - King Charles II of England granted a huge tract of land in the New World to William Penn to settle an outstanding debt. The area later became Pennsylvania.

.....

Compiled by: Ms. Poonam

Scarcity of Water... ..From pg 5

groups win at the expense of others. Chronic water scarcity can culminate in forced migration and domestic or regional conflicts, especially in geopolitically fragile areas.

Solution:

Water scarcity calls for a multi disciplinary strategy to address it. Ecosystem function must not be compromised in the equitable maximization of economic and social welfare as the aim of managing water resources. The "triple bottom line" refers to this concept, which combines equity, the environment, and economics. Around the world, numerous engineering, economic, and environmental solutions have been put forth or put into practice. The execution of sustainable resource management programs requires the use of sound science in all public and environmental policy, and public education is unquestionably essential for the conservation of water.

Priya Ranjan, MAJMC 2nd

Vocabulary

Circulation: The distribution of newspapers, magazines, and other print publications.

.....

Clip: A story cut from a publication or a segment cut from a video or audiotape.

.....

Concept Story: Feature story designed to pique the interest of a certain demographic audience

.....

Copy Editor: Last professional to see and approve written material before it is delivered to an audience by a media outlet. Responsible for its accuracy, grammar, and length.

.....

Contributing Reporter : Often used to describe a freelance writer.

.....

Content Marketing: A common practice where brands produce their own content, or hire someone else to produce it, and then market that information as an alternative to advertising.

Compiled by: Dr. Vijay Singh



है। ध्वनि प्रदूषण का प्रमुख कारण आधुनिक जीवनशैली, व्यवसायिक और उद्योगिक गतिविधियों, परिवहन, और शहरीकरण हैं। ध्वनि प्रदूषण जीवन को प्रभावित करता है, साथ ही जानवरों, पक्षियों, और पौधों के लिए भी हानिकारक हो सकता है।

ध्वनि प्रदूषण के प्रमुख स्रोतों में सड़क परिवहन, उद्योगिक कारखानों, विमानों का उड़ान, जीर्णवाला, और विभिन्न प्रकार के औद्योगिक सुरक्षा उपकरणों का उपयोग शामिल है। इनके अलावा, समाचार प्रसारण, उद्योग, सां अधिकतम स्तर पर, सामाजिक जागरूकता बढ़ाने, ध्वनि प्रदूषण के प्रभाव को जानकार लोगों को सही दिशा में निर्देशित करने, और ध्वनि प्रदूषण को कम करने के लिए सामुदायिक सहयोग बढ़ाने में महत्वपूर्ण भूमिका होती है।

4. भूमि प्रदूषण:

भूमि प्रदूषण एक संदिग्ध चुनौती है जो हमारे प्राकृतिक परिस्थितियों को प्रभावित करती है और जीवन के लिए हानिकारक हो सकती है। यह उत्पादन, उद्योग, और व्यापार के लिए भूमि के अनुचित उपयोग, प्रदूषण के उत्पादन और उपचार, और विकास के लिए अधिक से अधिक जनसंख्या के कारण हो सकता है।

भूमि प्रदूषण का प्रमुख कारण और स्रोत शहरीकरण, उद्योग, कृषि, और अन्य व्यावसायिक गतिविधियों में अनुचित उपयोग शामिल होते हैं। इन गतिविधियों के दौरान, विभिन्न प्रकार के रासायनिक, जैविक, और फिजिकल पदार्थों का निकास, जल और भूमि में अधिकतम विनाश, और विकास के लिए भूमि के अनुपयोग जैसे कारकों के कारण भूमि प्रदूषण होता है।

भूमि प्रदूषण के प्रमुख प्रभावों में जल संकट, जैव विविधता की हानि, और प्राकृतिक परिस्थितियों के

अस्तित्व को खतरे में डालने वाले बुरे प्रभाव शामिल होते हैं। जल संकट के कारण, पेयजल की कमी, समुद्री पानी का प्रदूषण, और जलवायु परिवर्तन का अधिकतम संभावना होती है। जैव विविधता की हानि के कारण, जीवों के संदर्भ में

संतुलित संवेदनशीलता की कमी हो सकती है और बाहरी प्रवासियों के आने के कारण अपार्थिव सांप्रदायिकता हो सकती है। प्राकृतिक परिस्थितियों के अस्तित्व को खतरे में डालने वाले बुरे प्रभावों के कारण, जलवायु परिवर्तन के प्रभावों को अधिक अनुभव किया जा सकता है और जलवायु परिवर्तन के प्रभावों को अधिक अनुभव किया जा सकता है।

भूमि प्रदूषण को कम करने के लिए कई प्रयास किए जा रहे हैं। इनमें शहरीकरण और उद्योगीकरण के लिए सही संरचना और योजनाएं बनाने, सभी प्राकृतिक संसाधनों को संरक्षित रखने, प्रदूषण नियंत्रण के लिए कड़ी कानूनी नीतियों को प्रचारित करने, और समुदायों को जागरूक करने के लिए शिक्षा और संचार के माध्यमों का उपयोग शामिल होता है।

प्रदूषण के समाधान

प्रदूषण एक गंभीर समस्या है जो हमारे पर्यावरण और स्वास्थ्य को प्रभावित करती है। यह वायु, जल, और भूमि प्रदूषण के रूप में विभिन्न रूपों में हो सकता है। इस समस्या का समाधान करने के लिए हमें सामाजिक, आर्थिक, और तकनीकी प्रयास करने की आवश्यकता है। निम्नलिखित हैं कुछ सुझाव जो प्रदूषण के समाधान में सहायक हो सकते हैं:

1. संज्ञान बढ़ाना: पहले और सबसे महत्वपूर्ण कदम है लोगों को प्रदूषण के बारे में जागरूक करना। सामाजिक माध्यम, स्कूलों, कॉलेजों, और सरकारी अभियानों के माध्यम से जनता को प्रदूषण के नुकसान की जानकारी दी जा सकती है।

2. तकनीकी उन्नति: प्रदूषण कम करने के लिए नई तकनीकों का उपयोग किया जा सकता है।

Kathan

“Whenever you see a successful woman, look out for three men who are going out of their way to try to block her.”

-Yulia Tymoshenko

.....

“Some women choose to follow men, and some choose to follow their dreams. If you’re wondering which way to go, remember that your career will never wake up and tell you that it doesn’t love you anymore.”

- Lady Gaga

.....

“The thing women have yet to learn is nobody gives you power. You just take it.”

- Roseanne Barr

.....

“No woman wants to be in submission to a man who isn't in submission to God!”

- T D Jakes

.....

“A witty woman is a treasure; a witty beauty is a power.”

-George Meredith

.....

Compiled by: Mr. Rahul K Darji

उदाहरण के लिए, जल प्रदूषण को कम करने के लिए स्वच्छ जल प्रौद्योगिकियों का उपयोग किया जा सकता है।

3. संगठन और सहयोग: समुदायों को मिलकर काम करना चाहिए ताकि प्रदूषण को कम किया जा सके। सरकारी और गैर-सरकारी संगठनों, स्थानीय समुदायों, और व्यावसायिक संगठनों को मिलकर काम करना चाहिए।

4. नियमों का पालन: प्रदूषण को रोकने के लिए सख्त नियम बनाए जाने चाहिए और उनका पालन किया जाना चाहिए। उदाहरण के लिए, ध्वनि प्रदूषण को नियंत्रित करने के लिए अनुचित ध्वनि उत्सर्जन की सीमाओं को निर्धारित किया जा सकता है।

5. प्राकृतिक संवर्धन: प्राकृतिक संवर्धन को बढ़ावा देना और वन्यजीवों की संरक्षा करना भी प्रदूषण को कम करने में मददगार हो सकता है। वृक्षारोपण, जल संरक्षण, और वन्यजीवों के प्राकृतिक आवास की संरक्षण को बढ़ावा देना चाहिए।

गुरराज सिंह चौहान, एमएजेएमसी द्वितीय